AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : स्थापना दिवस पर सजेगी शाम-ए-अवध

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 103वें स्थापना की शाम बेहद मनोरंजक होने वाली है। इस दिन मालवीय सभागार में शाम-ए-अवध नाम से कार्यक्रम का आयोजन होगा। आयोजन में विवि की सांस्कृतिकी सेल की ओर से यहां शिक्षक विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां देंगे। प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि स्थापना दिवस समारोह की शाम में लविवि के पूर्व छात्र-छात्राएं जो वर्तमान में यहां शिक्षक के तौर पर कार्यरत हैं, मंगलाचरण का गायन करेंगे। सांस्कृतिकी निदेशक प्रो. मधुरिमा लाल बेगम अख्तर की गजल प्रस्तुत करेंगी। यह प्रस्तुति फुल आर्केस्ट्रा पर होगी। इसके बाद कथक, कजरी व लोकनृत्यों पर प्रस्तुतियां होंगी। इसमें हेरिटेज वॉक भी होगी। संवाद

सेमिनार में वसुधैव कुटुंबकम पर चर्चा

लखनऊ। लविवि के दर्शनशास्त्र विभाग में शनिवार को आयोजित सेमिनार में शोध छात्रा निशी कुमारी ने वसुधैव कुटुंबकम, फॉरिस्टिंग ग्लोबल वेल-बीइंग थ्रू यूनिटी एंड अंडरस्टैंडिंग पर विचार व्यक्त किए। छात्रा ने कहा कि वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा से हम विभिन्नता को और अधिक सुंदर रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. रजनी श्रीवास्तव, प्राचार्य डॉ. राजेश्वर यादव, डॉ. प्रशांत शुक्ला समेत शोधार्थी और यूजी-पीजी के छात्र उपस्थित रहे। (संवाद)

प्राकृतिक जीवन शैली अपनाएं

लखनऊ। लविवि के योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा संकाय में शनिवार को राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस समारोह पर सेमिनार हुआ। मुख्य अतिथि वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. मदन मोहन पांडेय ने कहा कि मानव को स्वस्थ रहने के लिए प्राकृतिक जीवन शैली को अपनाना चाहिए। प्रो. बलराज चौहान ने कहा कि हर व्यक्ति की अपनी विशिष्ट जैव प्रणाली है। इसलिए व्यक्तिगत उपचार पर अध्ययन होना आवश्यक है। लोकपाल प्रो. रमेश शर्मा, संकायाध्यक्ष प्रो. अशोक सोनकर, समन्वयक डॉ. अमरजीत यादव, डॉ. सत्येंद्र मिश्रा आदि उपस्थित रहे। सेमिनार में संभाषण प्रतियोगिता में में परिणाम जारी होने पर सरिता, सुषमा व अर्चना को पहला, दूसरा व तीसरा स्थान मिला। (संवाद)

i-NEXT PAGE 5

पीएचडी अध्यादेश को गवर्नर हाउस से मिली हरी झंडी

3 साल से पहले और 6 साल बाद पीएचडी नहीं

LUCKNOW (18 Nov): लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से भेजे गए पीएचडी अध्यादेश-2023 को राजभवन से मंजूरी मिल गई है. यूजीसी की गाइडलाइन के अनुसार इसमें कई बदलाव किए गए हैं. पीएचडी पूरी करने के लिए न्यूनतम तीन साल व अधिकतम छह साल का समय होगा, लेकिन महिलाओं के लिए असाधारण परिस्थिति में अधिकतम 10 साल तक दिए जा सकेंगे. पीएचडी में शोध पत्रों की संख्या भी बढ़ गई है. स्वीकृत नए पीएचडी अध्यादेश के अनुसार ही सत्र 2023-24 के दाखिले होंगे.

सत्र 2023-24 के पीएचडी दाखिले इसी अध्यादेश के अनुसार होंगे

अध्यादेश राजभवन से पास

डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि 2023 के पीएचडी अध्यादेश राजभवन से पास हो गया है. पीएचडी थीसिस के मूल्यांकन के लिए प्रक्रिया आनलाइन होगी. इसमें विदेशी पर्यवेक्षक भी शामिल किए जाने की भी अनुमति दी गई है. अभी तक छह महीने का कोर्स वर्क पूरा होने के बाद डीआरसी, फिर फैकल्टी बोर्ड आदि से मंजूरी मिलने के बाद शोध पर्यवेक्षक आवंटित किए जाते थे. इसमें छह महीने गुजर जाते हैं. अब शोधार्थियों को प्रवेश के तुरंत बाद व कोर्स वर्क शुरू होने से पहले ही पर्यवेक्षक आवंटित किए जाएंगे.

इन्हें बनाया जा सकेगा

सुपरवाइजर

अभी तक सेवानिवृत्ति के एक साल शेष होने तक भी शिक्षकों को सुपरवाइजर बना दिया जाता था. अब नए पीएचडी अध्यादेश के अनुसार जिन शिक्षकों के सुपरएनुएशन के तीन साल (सत्र साल के साथ) बचेंगे, वो सुपरवाइजर बन सकेंगे.

प्री-पीएचडी में पढ़ने होंगे तीन पेपर

अब शोधार्थी को अधिकतम दो सह पर्यवेक्षक आवंटित किए जा सकेंगे. अभी तक संख्या नहीं तय थी. प्री-पीएचडी में दो की जगह अब तीन पेपर पढ़ने होंगे. पेपर एक-अनुसंधान और प्रकाशन नैतिकता 20 क्रेडिट, पेपर दो-अनुसंधान पद्धति पांच क्रेडिट और पेपर-तीन विषय क्षेत्र/अनुशासन में नवीन अनुसंधान दृष्टिकोण का होगा। इसके पांच क्रेडिट मिलेंगे.

बढ़ेंगे शोध पत्र

पीएचडी थीसिस शीघ्र जमा करने के लिए के लिए अब शोध पत्र की संख्या निर्धारित की गई है. चार साल में थीसिस जमा करने पर एक शोध पत्र, चार से पांच साल में दो, पांच से छह साल में तीन शोध पत्र प्रकाशित करने होंगे. अभी तक पूरी पीएचडी के दौरान शोध पत्र की संख्या दो थी. हर छात्र के लिए रिसर्च एडवाइजरी कमेटी बनेगी,

एलयू के स्थापना दिवस पर शाम -ए-अवध कार्यक्रम का आयोजन

बेगम अख्तर की गजल, मंगलाचरण, कथक, लोक नृत्य के कार्यक्रम होंगे

LUCKNOW (18 Nov): एलयू का 103वां स्थापना दिवस समारोह 25 नवंबर को मालवीय सभागार में होगा. इसकी तैयारियां तेजी से चल रही हैं. समारोह में सांस्कृतिकी की ओर से शाम-ए-अवध कार्यक्रम होगा.

24 को सजेगा परिसर

24 नवंबर को कला संकाय प्रांगण, प्रशासनिक भवन, मालवीय सभागार के सामने गार्डन आदि को भव्य तरीके से बिजली की रंगीन लाइटों से सजाया जाएगा. इसके अलावा समारोह में अंतरराष्ट्रीय एल्युमिनाई मीट भी आयोजित की जाएगी. इसके लिए रसायन विज्ञान विभाग के प्रो. अनिल मिश्रा को जिम्मेदारी सौंपी गई है. प्रवक्ता डा. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि इस आयोजन के अंतर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व स्टूडेंट्स जो वर्तमान में शिक्षक-शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं, वह मंगलाचरण गायन प्रस्तुत करेंगे.

कई कार्यक्रम

कार्यक्रम में विभिन्न कलाकारों की ओर से कथक, कजरी और उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य भी प्रस्तुत किया जाएगा. इसके लिए छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

वसुधैव कुटुंबकम् से ही समाज में आएगा सौहार्द

LUCKNOW(18 Nov): लखनऊ यूनिवर्सिटी के दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से सैटरडे को सेमिनार की विशेष श्रृंखला में दर्शनशास्त्र विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया. उन्होंने बताया कि वसुधैव कुटुंबकम् का अर्थ बताते हुए वैश्विक सौहार्द पर बल दिया.

यूनिवर्सिटी में मनाया गया राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह

टैगोर पुस्तकालय में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह के दौरान लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले विदेशी स्टूडेंट्स ने भ्रमण किया. भ्रमण के दौरान लखनऊ यूनिवर्सिटी के इंटरनेशनल कोऑर्डिनेटर प्रोफेसर आरपी सिंह टैगोर पुस्तकालय के मानद पुस्तकालय अध्यक्ष प्रोफेसर डी आर साहू, डॉ प्रवीश प्रकाश, ममता वैश्य एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे.

JAGRAN CITY PAGE IV

पीएचडी अध्यादेश-2023 को मिली मंजूरी

लवि : सत्र 2023-24 के पीएचडी दाखिले इसी अध्यादेश के अनुसार होंगे

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से भेजे गए पीएचडी अध्यादेश-2023 को राजभवन से मंजूरी मिल गई है। यूजीसी की गाइडलाइन के अनुसार इसमें कई बदलाव किए गए हैं। पीएचडी पूरी करने के लिए न्यूनतम तीन साल व अधिकतम छह साल का समय होगा, लेकिन महिलाओं के लिए असाधारण परिस्थिति में अधिकतम 10 साल तक दिए जा सकेंगे। स्वीकृत नए पीएचडी अध्यादेश के अनुसार ही सत्र 2023-24 के दाखिले होंगे।

डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि 2023 के पीएचडी अध्यादेश राजभवन से पास हो गया है। पीएचडी थीसिस के मूल्यांकन के लिए प्रक्रिया आनलाइन होगी। इसमें विदेशी पर्यवेक्षक भी शामिल किए जाने की भी अनुमति दी गई है। अभी तक छह महीने का कोर्स वर्क पूरा होने के बाद डीआरसी, फिर फैकल्टी बोर्ड आदि से मंजूरी मिलने के बाद शोध पर्यवेक्षक आवंटित किए जाते थे। इसमें छह महीने गुजर जाते हैं। अब शोधार्थियों को प्रवेश के तुरंत बाद व कोर्स वर्क शुरू होने से पहले ही पर्यवेक्षक आवंटित किए जाएंगे।

बढ़ेंगे शोध पत्र : पीएचडी थीसिस

अब प्री-पीएचडी में पढ़ने होंगे तीन पेपर

अब शोधार्थी को अधिकतम दो सह पर्यवेक्षक आवंटित किए जा सकेंगे। अभी तक संख्या नहीं तय थी। प्री-पीएचडी में दो की जगह अब तीन पेपर पढ़ने होंगे। पेपर एक-अनुसंधान और प्रकाशन नैतिकता 20 क्रेडिट, पेपर दो-अनुसंधान पद्धति पांच क्रेडिट और पेपर-तीन विषय क्षेत्र/अनुशासन में नवीन अनुसंधान दृष्टिकोण का होगा। इसके पांच क्रेडिट मिलेंगे।

शीघ्र जमा करने के लिए के लिए अब शोध पत्र की संख्या निर्धारित की गई है। चार साल में थीसिस जमा करने पर एक शोध पत्र, चार से पांच साल में दो, पांच से छह साल में तीन शोध पत्र प्रकाशित करने होंगे। हर छात्र के लिए रिसर्च एडवाइजरी कमेटी बनेगी, जो छात्र की निगरानी कर हर छह महीने पर की प्रगति देखकर अपनी रिपोर्ट देगी।

इन्हें बनाया जा सकेगा सुपरवाइजर : अभी तक सेवानिवृत्ति के एक साल शेष होने तक भी शिक्षकों को सुपरवाइजर बना दिया जाता था। अब नए पीएचडी अध्यादेश के अनुसार जिन शिक्षकों के सुपरएनुएशन के तीन साल (सत्र साल के साथ) बचेंगे, वो सुपरवाइजर बन सकेंगे।

स्थापना दिवस पर होगा शाम-ए-अवध कार्यक्रम

जासं, लखनऊ : लवि का 103वां स्थापना दिवस समारोह 25 नवंबर को मालवीय सभागार में आयोजित किया जाएगा। समारोह में सांस्कृतिकी की ओर से शाम-ए-अवध कार्यक्रम होगा।

प्रवक्ता डा. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि इस आयोजन के अंतर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राएं जो वर्तमान में शिक्षक-शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं, वह मंगलाचरण गायन प्रस्तुत करेंगे। सांस्कृतिकी की निदेशक प्रोफेसर मधुरिमा लाल बेगम अख्तर की गजल सुनाएंगी। उनकी यह प्रस्तुति फुल आर्केस्ट्रा पर होगी। इसके बाद कार्यक्रम में विभिन्न कलाकारों की ओर से कथक, कजरी और उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य भी प्रस्तुत किया जाएगा। इसके लिए छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि शाम-ए-अवध कार्यक्रम के अंतर्गत हेरिटेज वाक का भी प्रविधान किया गया है।

लवि के शिक्षकों को भी मिले ग्रेच्युटी का लाभ

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में शनिवार को शिक्षक संघ (लूटा) की आम सभा की बैठक हुई। महामंत्री अनित्य गौरव ने बताया कि बैठक में सरकारी शिक्षकों की तर्ज पर लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षकों को भी सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अनुसार सेवानिवृत्त पर ग्रेच्युटी की सुविधा दिए जाने का मुद्दा उठाया गया। सहमति बनी कि इसके लिए सरकार से वार्ता की जाएगी। शिक्षकों को जल्द से जल्द मेडिकल बीमा सुविधा उपलब्ध कराने, शिक्षकों की प्रोन्नति शीघ्र किए जाने, यूजीसी रेगुलेशन 2018 को पूर्णतः लागू करने के लिए सरकार से वार्ता करने, पीएचडी इंक्रीमेंट प्रदान किए जाने के संबंध में भी राज्य सरकार से वार्ता की जाएगी।

लखनऊ विश्वविद्यालय में भी सजीव प्रसारण

जासं, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि विश्व कप क्रिकेट मैच और भारतीय टीम के जीत का गवाह विश्वविद्यालय भी बनेगा। परिसर में सभी हास्टल में मैच दिखाने की व्यवस्था रहेगी। एथलेटिक्स एसोसिएशन के सामने बड़ी स्क्रीन पर मैच देखने की व्यवस्था की गई है। उम्मीद है कि भारतीय टीम यादगार जीत दर्ज करेगी।

लवि में व्याख्यान

लखनऊ : लखनऊ विश्वविधालय के दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से शनिवार को वसुधैव कुटुम्बकम, एकता और समझ के माध्यम से वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देना विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी ने कहा कि वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा से इस विभिन्नता को और अधिक सुंदर रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस अवसर पर विभागाध्यक्षा डा. रजनी श्रीवास्तव, डा. राजेश्वर यादव, डा. प्रशांत शुक्ला के साथ स्नातक-परास्नातक के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। (जासं)

LOKSATYA PAGE 3

प्राकृतिक चिकित्सा के सार्वभौमिक व वैज्ञानिक विकास पर जोर दिया

लखनऊ, लोकसत्य

योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा संकाय और कंचनकाया प्राकृतिक चिकित्सा योग एवं एक्यूप्रेशर संस्थान की ओर से षष्ठम राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस समारोह पतंजलि हाल योग विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय में हुआ। समग्र स्वास्थ्य में प्राकृतिक चिकित्सा की भूमिका विषयक सेमिनार व संभाषण प्रतियोगिता हुई।

मुख्य अतिथि प्रो बलराज चौहान पूर्व कुलपति नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी लखनऊ, भोपाल व जबलपुर ने मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई। प्रो. चौहान ने प्राकृतिक चिकित्सा के सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक विकास पर जोर देते हुए प्रमाण आधारित, वैधानिक अध्ययन पर जोर देने की बात कही। प्राकृतिक चिकित्सा की विलक्षणता को उन्होंने अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट है तथा उसकी अपनी विशिष्ट जैव प्रणाली है इस कारण प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता अलग हो सकती हैं उसके अनुसार व्यक्ति के उपचार की आवश्यकता होगी और इस कारण व्यक्तिगत उपचार पर अध्ययन होना आवश्यक है। मुख्य वक्ता प्राकृतिक चिकित्सक डॉ मदन मोहन पांडेय ने पूर्व जिला युवा कल्याण अधिकारी ने अपने मौलिक भाषण में प्राकृतिक चिकित्सा की उत्पत्ति, विकास उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए जोर देकर के कहा मन में भरकर जीने की अपेक्षा व्यक्ति को मन भर जीने का प्रयास करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि निवर्तमान लोकपाल प्रो रमेश शर्मा ने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा के वैज्ञानिक अध्ययन पर हर प्रकार से सहयोग एवं मार्गदर्शन देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम अध्यक्ष योग संकाय की संकाय अध्यक्ष प्रो अशोक कुमार सोनकर ने सहभागियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों का स्वागत किया।।

निशी ने बताई वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा

लखनऊ।लखनऊ विश्वविधालय के दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से सैटरडे सेमिनार की विशेष श्रृंखला में विभागाध्यक्ष डॉ रजनी श्रीवास्तव के संरक्षण में व्याख्यान हुआ।व्याख्यान में दर्शनशास्त्र विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी ने व्याख्यान दिया।व्याख्यान के माध्यम से उन्होनें वसुधैव कुटुंबकम्का अर्थ बताते हुए वैश्विक सौहार्द्र पर बल दिया।उन्होनें विश्व के प्रत्येक स्तर पर विभिन्नता को दर्शाते हुए बताया कि किस प्रकार से हम वसुधैव कुटुंबकम्की अवधारणा से हम इस विभिन्नता को और अधिक सुंदर रूप में प्रस्तुत की जा सकती है।व्याख्यान के बाद कई महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा हुई।सेमिनार में दर्शनशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ रजनी श्रीवास्तव के साथ विभाग के प्राचार्य डॉ राजेश्वर यादव, डॉ प्रशांत शुक्ला उपस्थित रहे।सेमिनार में विभाग के शोधछात्रों के साथ स्नातक व परास्नातक के छात्र मौजूद रहे। लोकसत्य

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

लविवि : सेमिनार में वैश्विक सौहार्द पर दिया जोर

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। विश्वविधालय के दर्शनशास्त्र विभाग ने शनिवार सेमिनार की विशेष श्रृंखला में विभागाध्यक्षा डॉ.रजनी श्रीवास्तव के संरक्षण में एक व्याख्यान का आयोजन किया। इस व्याख्यान में दर्शनशास्त्र विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान का विषय वसुधैव कुटुंबकम् एकता और समझ के माध्यम से वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देना था। अपने व्याख्यान के माध्यम से उन्होनें वसुधैव कुटुंबकम् का अर्थ बताते हुए वैश्विक सौहार्द पर बल दिया। उन्होनें विश्व के प्रत्येक स्तर पर विभिन्नता को दर्शाते हुए बताया कि किस प्रकार से हम वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा से हम इस विभिन्नता को और अधिक सुंदर रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है और विश्व के द्वंद को कम करने में सहायक हैं। उनके व्याख्यान के बाद कई महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा हुई। सेमिनार में दर्शनशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ.रजनी श्रीवास्तव के साथ विभाग के प्राचार्य डॉ.राजेश्वर यादव, डॉ.प्रशांत शुक्ला उपस्थित रहे।सेमिनार में विभाग के शोध छात्रों के साथ स्नातक व परास्नातक छात्र उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय छात्रों ने टैगोर पुस्तकालय का किया भ्रमण

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ।विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित टैगोर लाइब्रेरी में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह के दौरान लविवि में पढ़ने वाले अंतराष्ट्रीय विद्यार्थियों ने भ्रमण किया। इस दौरान छात्रों ने लाइब्रेरी में मौजूद नामचीन पुस्तकें और म्यूजियम में रखी दुर्लभ कलाकृतियों एवं कला वस्तुओं को देखा।आर्ट गैलरी में मौजूद भारतीय संविधान की मूल प्रति को देखकर छात्र उत्साहित नजर आए। इस मौके पर अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के साथ लविवि के इंटरनेशनल कोऑर्डिनेटर प्रो.आरपी सिंह टैगोर पुस्तकालय के मानद पुस्तकालय अध्यक्ष प्रो.डी.आर. साहू, डॉ.प्रवीश प्रकाश, ममता वैश्य एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

HINDUSTAN PAGE 7

पीएचडी अध्यादेश को राजभवन से मंजूरी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के संशोधित पीएचडी अध्यादेश को राजभवन से मंजूरी मिल गई है। सत्र 2023-24 की पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया शुरू करने में किसी तरह की परेशानी नहीं होगी। एलयू प्रशासन के अनुसार, यूजीसी गाइडलाइंस के अनुसार, एलयू का संशोधित पीएचडी अध्यादेश तैयार किया गया था। जिसे कार्य परिषद से पास कराकर राज्यपाल की मंजूरी के लिए भेजा गया था। जहां से बिना किसी बदलाव के अध्यादेश को मंजूर कर दिया गया है।

वसुधैव कुटुंबकम से विश्व द्वंद को कम कर सकते

लखनऊ। एलयू के दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से सैटरडे सेमिनार का आयोजन हुआ। शोध छात्रा निशी कुमारी ने वसुधैव कुटुंबकम, फॉरेस्टिंग ग्लोबल वेल-बीइंग थ्रू यूनिटी एंड अंडरस्टैंडिंग पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हम वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा से विभिन्नता को और अधिक सुंदर रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। विश्व के द्वंद को कम करने में सहायक हैं। दर्शनशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. रजनी श्रीवास्तव समेत अन्य मौजूद रहे।

स्थापना दिवस पर होगा शाम-ए-अवध कार्यक्रम

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ।विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय के दिशानिर्देश से 25 नवंबर को मालवीय सभागार में आयोजित होने वाले स्थापना दिवस के अवसर पर सांस्कृतिकी की तरफ से शाम-ए-अवध कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में लविवि के पूर्व छात्र-छात्राओं के द्वारा जो वर्तमान में शिक्षक-शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं मंगलाचरण गायन होगा।इसके पश्चात सांस्कृतिकी की निदेशक प्रो.मधुरिमा लाल बेगम अख्तर की ग़ज़ल को प्रस्तुत करेंगी। मधुरिमा लाल की यह प्रस्तुति फुल आर्केस्ट्रा पर होगी।इसके बाद कार्यक्रम में विभिन्न कलाकारों द्वारा कथक, कजरी और उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य भी प्रस्तुत किया जाएगा। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत हेरिटेज वॉक का भी प्रावधान किया गया है।